शोध मंथन Vol. XV No.I Jan.-Mar.2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

आधुनिक भारतीय मूर्तिकला में रामकिंकर बैज

प्राप्तिः 14.03.2024
स्वीकृतः 25.03.2024

16

डॉ० ओम प्रकाश मिश्रा
प्राचार्य
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी
देहरादून (उत्तराखंड)
ईमेलः *mishraop200@gmail.com*

रितिका शर्मा
शोधार्थी
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड
टेक्नोलॉज, देहरादून (उत्तराखंड)

सारांश

कला एक, दुर्लभ उपहार है, कला केवल एक आवाज, एक दृश्य, एक मात्रा का प्रतिभा नहीं है, कला वह है जो न केवल आपको आनंद दे बल्कि अपनी रुचि और सुझाव को एक आकार दे आपकी कला ही आपको कुछ भी सष्जन करने में मदद करती है, इसके मालवा कला को हम मूलतः एक उद्योग के रूप में प्रयोग कर सकते है। आपके अंदर किसी भी प्रकार की कला होना एक महान क्षमता दर्शाता है यह आपके स्तर, प्रेम, और बुद्धी का एक मानक प्रासादहै।कला हमारे मन की अभिव्यक्ति को प्रकट करने का एक माध्यम है। जिसे हम अपनी इच्छानुसार भिन्न–भिन्न स्वरुप देते है आर्थात कला को मानवीय भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति कहा गया है कई विद्वानों का मानना है की कला कल्याण की जननी है। उनका कथन है, की कल्पना के सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति का नाम ही कला है। तथा कल्पना की अभिव्यक्ति अलग–अलग प्रकार से एवं अलग–अलग माध्यमो द्वारा हो सकती है। यह अभिव्याक्ति जिस भी माध्यम एवं जिस भी प्रकार से ही, वही कला के अन्तर्गत आती है।

मुख्य बिनदु

प्रसिद्ध, मूर्तिकार, मूर्तिकला का जनक।

रामकिंकर बैज को आधुनिक भारतीय मूर्तिकला का जनक कहा गया है उनकी गणना आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के अग्रदूतो में होती है उनके मुख्य मूर्ति शिल्प हैं संभलपरिवार, मिस कॉल महात्मा बुद्ध मिथुन, सुजात व रविंद्र नाथ टैगोर। वह अपने संकल्प से भारतीय कला में आधुनिक कलाकारों में से एक बने। भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया। उनका जन्म पश्चिम बंगाल के बांकुरा जिले में एक मामूली परिवार में हुआ वह एक बंगाली थे लोग सोचते थे कि वह आदिवासी हैं। उनकी कई कलात्मक रचनाएं उनके कार्यस्थल शांतिनिकेतन और उनके आसपास रहने वाले दलित या आदिवासी समुदायों की जीवन शैली से

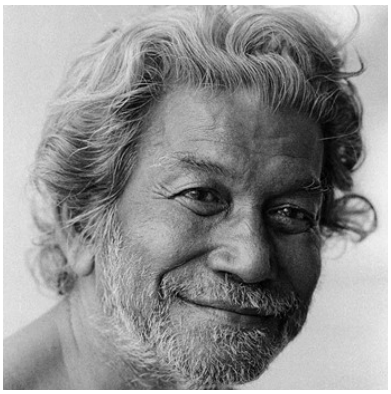

प्रेरित है अपनी बाल अवस्था में रामकिंकर भारत के ब्रिटिश शासको के खिलाफ असहयोग आंदोलन में शामिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रों को चित्रित करते थे 16 साल की उम्र में उन्हें प्रसिद्ध पत्रकार राम आनंद चटर्जी ने देखा। रामकिंकर ने 4 साल बाद ललित कला में शांतिनिकेतन में विश्व भारती विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। विश्वविद्यालय से डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद वह मूर्ति कला विभाग के मुख्य बने उनके प्रसिद्ध मूर्तिकाल विषयों में प्रभाससेन, अवतार सिंह पवार, मदन भटनागर, बलवीर सिंह कट, राजुलदरियाल और सुसान घोष शामिल है। सन 1925 में उन्होंने कला भवन में प्रवेश सुनिश्चित किया इसके साथ ही नंदलाल बोस के मार्गदर्शन अनेक बारीकियां सीखी। उनको वहां बौद्धिक माहौल में उनके कलात्मक कौशल और बौद्धिक क्षितिज को नए आयाम मिले।

इससे उन्हें ज्ञान में और भी अधिक गहराई प्राप्त हुई वह अपनी पढ़ाई पूरी करने के तुरंत बाद संकाय के एक सदस्य बन गए फिर उन्होंने नंदलाल बोस और विनोद बिहारी मुखर्जी के साथ मिलकर शांति निकेतन को आजादी पूर्व भारत के आधुनिक काल में सबसे महत्वपूर्ण केंद्र से एक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी यादगार मूर्तियां सार्वजनिक कला में प्रमाणित मिल का पत्थर है। भारतीय कला में सबसे पहले आधुनिकता वादियां में से एक रामकिंकर ने यूरोप आधुनिक दृश्य भाषा की शैली को आत्मसात किया इसके बावजूद वह अपने ही भारतीय मूल्य से गहरे रूप से जुड़े थे उन्होंने पहले अलंकारिक शैली और फिर बाद में भावनात्मक शैली और फिर उसके बाद वापस अलंकारिक शैली में पूरी लालसा के साथ अनगिनत प्रयोग किया।

वह ज्यादातर मानवतावाद की गहरी समझ और मनुष्य एवं प्रकृति के बीच पारस्परिक निर्भरता वाले संबंधों की सहज समाज से जुड़ी होती थी। अपनी पेंटिंग एवं मूर्तियां दोनों में ही उन्होंने प्रयोग की सीमाओं को नए उच्चतर पद पर पहुंचा दिया इसके साथ ही नई सामग्री का खुलकर प्रयोग किया। उनके द्वारा कुछ यादगार सार्वजनिक मूर्तियों में से किया गए सीमेंटकंक्रीट के उपयोग ने कला के क्षेत्र में अपनाई जाने वाली प्रथाओं के लिए एक नई मिसाल पेश की। प्रतिमाओं को बेहतरीन बनाने के लिए उसमें सीमेंट, लेटराइट एवं गारे का उपयोग और आधुनिक पश्चिमी एवं भारतीय शास्त्रीय पूर्व मूर्ति कला मूल्य का समावेश करने वाली अभीनव निजी शैली का इस्तेमाल दोनों ही समान रूप से असाधारण थे।

रामकिंकर बैज को कलाकृतियों को शुरुआत में लोकप्रिय होने के लिए थोड़ा इंतजार करना पड़ा पर धीरे–धीरे वह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर लोगों का ध्यान खींचने में कामयाब होने लगे उन्हें वर्ष 1950 में सैलोन डेसरेलीटिसनूवेल्स और वर्ष 1951 में सैलोनडेमाई में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया उनको एक के बाद एक कई राष्ट्रीय सम्मानों से नवाजा गया। सन 1970 में भारत सरकार ने उन्हें भारतीय कला में उनके अमूल्य योगदान के लिए पद्म भूषण से सम्मानित

किया। सन 1976 में उन्हें ललित कला अकादमी का एक फेलो बनाया गया उन्हें वर्ष 1976 में विश्व भारती द्वारा मदन डॉक्टर उपाधि देशत्तम और वर्ष 1979 में रविंद्र भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा मदन डि. तिल से सम्मानित किया गया।

कोलकाता में कुछ समय तक बीमार रहने के बाद रामकिंकर बैज 2 अगस्त 1980 को अपनी अंतिम एवं अनंत यात्रा पर निकल पड़े।

मिस कॉल

मूर्ति शिल्प की रचना सन 1956 में रामकिंकर बैज द्वारा की गई यह शांतिनिकेतन में स्थापित है। इसका ढांचा बनने में लोहे का उपयोग किया गया जिस पर आकार बनाने के लिए सीमेंट बजरी का उपयोग किया गया इस मूर्ति शिल्प में दो स्त्रियों व बालक को तेज गति में जाते हुए दिखाया गया है यह चावल की मिल में काम करने वाली मजदूर स्त्रियां है उनको मिल के सामान की आवाज सुनाई थी जिसे वह मिल की तरफ प्रस्थान कर रही है इनके पास कपड़े सुखाने का भी समय नहीं था इसलिए वह दौड़ते हुए कपड़े सुखा रहे गति दिखाने के लिए स्त्रियों के कपड़े को उड़ते हुए पैरों से मिट्टी को उछलते हुए दिखाया गया है स्त्री को आगे की ओर दिखाते हुए दूसरे स्त्री को पीछे की ओर दिखाते हुए दिखाया गया है लड़के का मुंह ऊपर की ओर दिखाते हुए दिखाया गया है इस मूर्ति शिल्प में कालागत दृष्टि से गति प्रभाव लावणी प्रमाण आदि का समावेश श्रेष्ट रूप से किया गया है।

संथाल परिवार

संथाल परिवार मूर्ति शिल्प की रचना सन 1938 में शांतिनिकेतन में की गई थी जिसमें दिखाया गया था एक साथ परिवार के एक पुरुश है एक महिला को दिखाया गया महिला के बाएं हाथ में एक शिशु और पुरुष की बाएं कंधे पर बड़ा कंवर है इसके आगे की तरफ वाली टोकरी में एक शिशु को बैठा हुआ दिखाया गया था। जिसके भार को संतुलित करने के लिए पिछली टोकरी में सामान रखा दिखाया गया है यह शिल्प आदम कद से डेढ़ गुना बड़ा है। मूर्ति शिल्प में जनजाति कृषक गरीब संभल परिवार का जीवन प्रस्तुत किया गया है जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हुए दिखाएं गए हैं।

शांतिनिकेतन और ज्ञान प्रदान करने के लिए एकमात्र केंद्र के बजाय कलात्मक प्रयोग के लिए एक स्थान के रूप में कल्पना की गई थी रामकिंकर ने इस अवसर का प्रयोग सार्वजनिक मूर्ति कला बनाने के लिए किया जो पूरी तरह से उनकी पहल पर किया

गया था 30 के दशक की शुरुआत में उन्होंने परिसर को एक के बाद एक मूर्तियों से भरना शुरू किया जो विषय वस्तु में नवीन और शैली में व्यक्तिगत थी इस शैली में उनका पहला महान काम 1938 में किया गया संताल परिवार था।

इस मूर्ति में उन्होंने क्षेत्र के आदिवासी किसानों का प्रतिनिधित्व किया आंकड़ों को प्रतिष्ठित उपस्थित और गरिमापूर्ण अनुग्रह प्रदान करते थे अब तक देवताओं और शासको की छवियां तक सिमिता। आंकड़ों को मॉडल करने के लिए सीमेंट का प्रयोग और एक व्यक्तिगत शैली का उपयोग जिसमें आधुनिक पश्चिमी और भारतीय पूर्व शास्त्रीय मूर्तिकला मूल्य को एक साथ लाया गया था रामकिंकर विलक्षण रूप से मितभाषी और अलैंगिक थे वह कला और मानवता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में एक दिमाग वाले थे उनके काम को संवेदनशील कलाकारों द्वारा देखा और सराय जाने से नहीं रोका भले ही वह एक छोटे समूह ही क्यों ना हो जबकि उनका काम काफी समय के लिए पारित हो गया था पर धीरे–धीरे इसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों तरह से ध्यान आकर्षित करने लगा। सन 1970 मैं भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया सन 1976 में उन्हें ललित कला अकादमी का फेलो बनाया गया। सन 1976 में उन्हें विश्व भारती द्वारा देसी कोतमा और सन 1979 में रविंद्र भारती विश्वविद्यालय द्वारा उनको मदन डि.लीट से सम्मानित किया गया।

संदर्भ

1. https%//www-theheritagelab-in/
2. https%//en-m-wikipedia-org
3. https%//amp bharatdiscovery org
4. https%//www-visvabharall-ac-in/RamkinkarBail-hted
5. https%//www-artbuzz-in/blogs/att/blog/the indian artist study rankinh
6. https%//indianeÛpress-com/